राजनीतिक दलों के साथ सम्बन्ध जोड़ती व तोड़ती है। उसके सशक्त चरित्र के कारण लोग उसके बारे में तरह–तरह की बातें करते है। इरावती का दर्द और बेबसी इन शब्दों द्वारा दिखाई देती है– ''असल में प्यार करने की ताकत मुझमें नहीं है। मेरे प्यार को लकवा मार गया है। दिन–रात इसी चेष्टा में रहती हूं कि मेरा प्यार फिर से पनपे। हजारों औरतों पर बलात्कार होते हुए देखा है ....दिन–रात इस पीड़ा से छटपटाई हूँ और चीखती रही हूँ.....सड़े हुए संतरों की तरह सड़कों पर कटी हुई छातियों को लुढ़कते हुए देखा है। मेरी छाती पर भी दो कटे हुएस्तन रखे हुए हैं बेजान मांस के टुकड़े। इतना सबकुछ देखने और सहने के बाद किसी औरत का दिल दिमाग प्यार करने के काबिल कैसे रह सकता है।''[11]

स्त्री सदा से नागार्जुन के रचना के केन्द्र में रही है। उन्होंने अपनी रचनाओं के द्वारा सदैव स्त्री को समाज का सक्रिय व महत्वपूर्ण अंग बनाने का प्रयास किया है। नागार्जुन के उपन्यास 'रतिनाथ की चाची' में मिथिला के जनजीवन को कथा का आधार बनाया गया है। रतिनाथ की चाची गौरी विधवा ब्राह्मणी है। गौरी पर उसके देवर जयनाथ के द्वारा चरित्रहीनता का आरोप लगाया जाता है। जब गौरी गर्भधारण कर लेती है तो लोग उसका परिहास व बहिष्कार कर देते है। लोग उस असहाय स्त्री के बारे में बोलते हैं– ''उमानाथ की मां पतिता है, भ्रष्टा है, कुलटा है... उससे किसी भी प्रकार का सम्बन्ध नहीं रखना चाहिए।''[12] इस उपन्यास में चाची के चरित्र पर लगे दाग को हटाकर उसके ममतामयी वात्सल्य रूप का भारतीय नारी के रूप में चित्रण किया गया है। नागार्जुन द्वारा रचित 'वरूण के बेटे' में मधुरी का चरित्र वात्सल्य और क्रान्ति से भरा है। वह मछुआरे की पुत्री होने के बाद भी पुरूषों से कन्धे से कन्धा मिलाकर काम करती है। मधुरी द्वारा अपने प्रेमी व पति का त्याग करना ग्रामीण अंचल की स्त्री के लिए अत्यन्त साहस का काम है। मधुरी कहती है– ''जिन्दगी और जहान औरतों के लिए नहीं होते क्या।''[13] इस उपन्यास में मधुरी अपने बारे में न सोचकर समाज के लोगों के लिए काम करती है। उसका चरित्र दूसरों के लिए अपने जीवन को समर्पित करता दिखाई देता है।

सन्दर्भ :–

1. सत्येन्द्र चतुर्वेदी–उदयशंकर भट्ट : व्यक्तित्व, कृतित्व और जीवन दर्शन, पृष्ठ 159
2. डा0 रामदरश मिश्र– जल टूटता हुआ, पृष्ठ –232
3. डा0 राही मासूम रज़ा–आधा गांव, पृष्ठ –110
4. डा0 राही मासूम रज़ा–आधा गांव, पृष्ठ –311
5. रामदरश मिश्र– जल टूटता हुआ, पृष्ठ –144
6. डा0 रामदरश मिश्र– पानी के प्राचीर, पृष्ठ –159
7. उदयशंकर भट्ट – लोक परलोक, पृष्ठ –56
8. राही मासूम रज़ा– आधा गांव, पृष्ठ –118
9. राही मासूम रज़ा– आधा गांव, पृष्ठ –61–62
10. नागार्जुन– बलचनमा, पृष्ठ –60
11. फणीश्वनाथ रेणु, परती परिकता, पृष्ठ –121
12. नागार्जुन–रतिनाथ की चाची, पृष्ठ –47
13. नागार्जुन–वरूण के बेटे, पृष्ठ –79

❐❐❐

RNI No. MPHIN/2004/14249

मासिक

अक्षर वार्ता

मूल्यः 150 /- रूपये

वर्ष-16 अंक-11 (सितंबर - 2020)
Vol - XVI Issue No - XI
(September-2020)

अतिरिक्त विशेषांक

ISSN 2349 - 7521 , IMPACT FACTOR - 3.765
indexed in the International Institute of Organized Research (I2OR) database
Monthly International Referred Journal & Peer Reviewed
कला-मानविकी-समाजविज्ञान-जनसंचार-वाणिज्य-विज्ञान-वैचारिकी की अंतरराष्ट्रीय रेफर्ड शोध पत्रिका
» aksharwartajournal@gmail.com » www.aksharwartajournal.com » +918989547427

ISSN 2349 - 7521
RNI No. MPHIN/2004/14249

मासिक

अक्षर वार्ता

Impact Factor - 3.765

वर्ष-16 अंक-11 , सितंबर - 2020
Vol - XVI, Issue No. XI
September 2020

अतिरिक्त विशेषांक

aksharwartajournal@gmail.com

INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

प्रधान संपादक - प्रो. शैलेन्द्रकुमार शर्मा

संपादक- डॉ.मोहन बैरागी

संपादक मण्डल :-

डॉ.जगदीशचन्द्र शर्मा (उज्जैन)

प्रो.राजश्री शर्मा

डॉ. शशि रंजन 'अकेला' (आरजीपीवी,भोपाल)

सहयोगी सम्पादक:- डॉ. मोहसिन खान (महाराष्ट्र)

सह सम्पादक- डॉ.भेरुलाल मालवीय

डॉ. अंजली उपाध्याय

डॉ. पराक्रम सिंह

डॉ. रूपाली सारये

डॉ. विदुषी शर्मा

डॉ. ख्याति पुरोहित

डॉ. अविनाश कुमार अस्थाना

शोध-पत्र भेजने संबंधी नियम

शोध-पत्र 2500-5000 शब्दों से अधिक नही होना चाहिये। ०. हिन्दी माध्यम के शोध पत्रों को कृतिदेव 010 (Kruti Dev 010) या युनिकोड मंगल फोंट में टाईप करवाकर माईक्रोसॉफ्ट वर्ड में भेजें। ०. अंग्रेजी माध्यम के शोध-पत्र टाईम्स न्यु रोमन (Times New Roman) ,एरियल फोंट (Arial) में टाईप करवाकर माईक्रोसॉफ्ट वर्ड में अक्षरवार्ता के ईमेल पर भेजने के बाद हार्ड कॉपी तथा शोध-पत्र मौलिक होने के घोषणा-पत्र के साथ हस्ताक्षर कर अक्षरवार्ता के कार्यालय को प्रेषित करें। ०. Please Follow- APA/MLA Style for formatting अक्षरवार्ता का वार्षिक सदस्यता शुल्क रूपये 650/-रूपये एवं प्रकाशन/पंजीयन शुल्क रूपये 1500/- का भुगतान बैंक द्वारा सीधे ट्रांसफर या जमा किया जा सकता है। बैंक विवरण निम्नानुसार है- बैंक :-

Corporation Bank,
Account Holder- Aksharwarta
Current Accont NO.
510101003522430
IFSC- CORP0000762,
Branch- Rishi Nagar,Ujjain,MP,India

भुगतान की मुल रसीद,शोध-पत्र एवं सीडी के साथ कार्यालय के पते पर भेजना अनिवार्य है। Email: aksharwartajournal@gmail.com

संपादकीय कार्यालय का पता- संपादक अक्षर वार्ता
43,क्षीर सागर,द्रविड मार्ग,उज्जैन,मप्र. 456006,भारत
फोन :- 0734-2550150 मोबा :-8989547427

Subscription Form (Photocopy of this form may be used, if required)

I/ We wish to subscribe the Journals. Total Amount : 650/- (Six hundred Fifty only)(INR) and/or 1500/- Registration Fee. All fee and Subscriptions are payable in advance and all rates include postage and taxes. Subscribers are requested to send payment with their order whenever possible. Issues will be sent on receipt of payment. Subscriptions are entered on an annual basis and are subject to renewal in subsequent years.

Subscription from:.....to.....SUBSCRIBER TYPE:(Check One) Institution( )/Personal ()Date:.....Name/Institution and Address :.....City : .....State :.....PinCode..... Country ..... PhoneNo .:..... MobNo.:..... Mail id.....

PAYMENT OPTION:

DD in the favor of "AKSHARWARTA" payable at UJJAIN. DD No.: .....Dated : .....for Rupees (in words) .....Drawn on .....Any other option Specify :.....

अनुक्रम

» राजभाषा हिन्दीः समकालिन चुनौतियॉं
डॉ. मो. मजीद मियाँ 06

» चित्रा मुद्गल का कथा - साहित्यः स्त्री जीवन के विविध रूप
डाकोरे कल्याणी लिंगुराम 10

» 'पानी के प्राचीर' में अभिचित्रित आर्थिक मूल्य
निशा सिंह रघुवंशी
शोध निर्देशिका- डॉ. श्रीमती प्रतिमा यादव 12

» साहित्य, समाज और संस्कृति
डॉ. मोनिका देवी 14

» भारत की चुनाव प्रक्रिया में दलित वोट की राजनीति
डॉ. हेम नाथ झा 17

» प्रौद्योगिकी साक्षरता के परिप्रेक्ष्य में लोकप्रिय साहित्य में हिंदी अनुवाद का महत्व और उपयोगिता
डॉ. रंजीत कुमार 20

» पुरूष सदी का अंत रचती एक लंबी कहानी
रोली यादव, शोध निर्देशक - प्रो. देवेन्द्र नाथ सिंह 24

» मन्नू भंडारी - कथा साहित्य में यथार्थ चित्रण का स्वरूप
श्रीमती अर्चना कोरान्ने
शोध निर्देशक- डॉ. अवनीश कुमार अस्थाना 26

» प्राचीन भारतीय राज्य व्यवस्था में न्याय की संकल्पना : एक अध्ययन
आशुतोष कुमार मिश्रा
शोध निर्देशक- डॉ. अशोक कुमार त्यागी 29

» सूचना प्रौद्योगिकी और राष्ट्रीय एकता के संदर्भ में हिंदी की दिशा और दशा
डॉ. सुनीता साह 31

» स्वयं प्रकाश के कथा - साहित्य में वर्ग - संघर्ष
हरिओम कुमार साह 35

» आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी का आलोचना कर्म और गाँधीवाद
विजयेता नागवंशी 38

» राष्ट्र - प्रेम का प्रतीक 'सुभद्रा कुमारी चौहान'
प्रियंका सिंह 41

» गाँधीवाद के आधार स्तंभ : 'सत्य' और 'अहिंसा'
पवन कुमार मिश्रा
शोध निर्देशक - डॉ. आभा वाजपेयी 43

» सम्प्रेषणीयता के सन्दर्भ में अप्रस्तुत - विधान
डॉ. नीलम पाण्डेय 45

» साठोत्तर हिन्दी कथा साहित्य
हेमलता गुप्ता 48

» 'कोई किताब इस के तईं साफ़ न थी दर्स की'
कुमुद रंजन मिश्र 50

» किन्नरों की मर्मान्तक पीड़ा का चित्रण : 'किन्नर कथा'
काजल 55

» दिनकर : युद्ध में शान्ति का कवि
गुड़िया कुमारी 57

» नये बोध का कवि अज्ञेय
डॉ. राजेश कुमार शर्मा 60

» श्रृंखला की कड़ियाँ में व्यक्त स्त्री जीवन
राज कुमार शर्मा 65

» ब्रह्मपुराण में योग - क्रिया का वर्णन
सुनील कुमार मुदगिल
शोध निर्देशक - डॉ. डी. पी. अहिरवार 67

» अतीत के चलचित्र : अनुभूतित चेतना के स्वर
प्रीति प्रसाद 69

» निराला का काव्य : आभिजात्य से जन चेतना की ओर प्रेरणा 71

» हिन्दी साहित्य के महान विचारक : संत रैदास
स्नेहा भास्कर 74

» अंग जनपद में वैदिक और बौद्ध शिक्षा में तंत्र
अंजनी कुमार सुमन 76

» बच्चन की आत्मकथा में राजनैतिक - ऐतिहासिक प्रसंग
डॉ. विभाषा मिश्र 78

» हिंदी काव्य में तार - सप्तक की अवधारणा
डॉ. जगुसिंह पंवार 81

» छायावादी काव्य में नारी चेतना
डॉ. साधना सिंह 83

» अचेतन मन का चेतन स्वरूप है : छायावाद
डॉ. सुरेश कुमार पटेल 86

» आधुनिक हिन्दी साहित्य में पर्यावरणीय चेतना
डॉ. नीलम पाण्डेय 88

» प्रेमचंदोत्तर कथा परंपरा में जैनेन्द्र की भूमिका
अमृता प्रीतम 92

» महात्मा गाँधी की राजनीति और महिलाएं
मनीष कुमार सिंह 94

» ''स्त्री वेदना का चितार जैनेन्द्र का त्यागपत्र''
डॉ. पारूलबहन अलखाभाई परमार 97

» 'मिथकीय विषयों' पर शोध की संभावनाएं
प्रीति कुमारी 99

» मृणाल पाण्डे के साहित्य में स्त्री यथार्थ
डॉ. अभिलाषा कुमारी 102

» हिंदी दलित साहित्य का रचनात्मक वैशिष्ट्य
डॉ. साक्षी शालिनी 104

अक्षर वार्ता
ISSN 2349-7521
Vol - XVI, Issue - XI, September - 2020

अतिरिक्त विशेषांक
"AKSHARWARTA" Monthly International Referred Journal

पुरूष सदी का अंत रचती एक लंबी कहानी

रोली यादव
शोध निर्देशक - प्रो. देवेन्द्र नाथ सिंह

शोधार्थी, हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग, डॉ. शंकुतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ
शोध निर्देशक - प्रो. देवेन्द्र नाथ सिंह, गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

बीसवीं सदी के जिस नवें दशक में मैत्रेयी पुष्पा ने यह कहानी लिखी है वह मूलतः और मुख्यतः ग्लोबलाइजेशन का दौर है। साहित्य के इतिहास में इसे उत्तर आधुनिक दौर कहा जाता है। इस दौर में विमर्शों की कहानियां लिखी जा रही थी। स्त्री विमर्श इस समय का मुख्य विषय है। स्त्री के प्रश्न हाशिये से उठकर केंद्र में आ रहे थे। लेकिन गोमा हंसती है इस तरह की विशुद्ध विमर्शों वाली कहानी नहीं है। लगभग 20 वर्ष पहले मंजुलभगत ने एक लंबी कहानी अनारो लिखी थी। शहरी पृष्ठभूमि की मजदूर स्त्री अनारो का चरित्र ज्यादा साफ सुथरा ज्यादा स्वाभिमान से भरा था। अनारो की तुलना में गोमा का चरित्र थोड़ा भिन्न है। अनारो अपने स्वाभिमान के लिए सिर्फ और सिर्फ अपने श्रम पर निर्भर थी। उसकी तुलना में गोमा थोड़ा छल प्रपंच थोड़ा त्रियाचरित्र कहे जाने वाले मुहावरों का भी सहारा लेती है। पुरुष सत्ता के भीतर वह अपने पति के अलावा एक और पुरुष को भी अपने मायाजाल में उलझाए रखती है। पति की कुरूपता का विकल्प अपने प्रेम जाल में फंसे बली सिंह को रखैल बना कर रखती है। जाहिर है अतीत में पुरुष ही रखैल रखते थे यह उसका बदला है। और उससे भी ज्यादा प्रेम की मानवीय और सहज इच्छा भी है। और बली सिंह का खेत अपने नाम लिखा लेने की जुगत भी है। कई किस्म के समीकरण मिलकर गोमा का चरित्र निर्मित होता है। बेहद चुलबुली ,खुशमिजाज और अपना आधिपत्य बनाये रखने में वह सक्षम होती है। गोमा हिंदी कहानी के परिचित और परंपरागत जाने पहचाने स्त्री चरित्रों से भिन्न है उसकी ट्रेजडी प्रेमचंद के औपन्यासिक चरित्र निर्मला की तरह है–

'बड़े, तुम इतनी उमर पाकर भी बैयर की जिंदगानी नहीं जाने–समझे? बछिया–पड़िया, कि डंगर से भी गई–गुजरी! पौहे (पशु) की रस्सी पकड़ाते बखत मालिक यह तो देखता है कि अगले के खूँटा पर अवस जीव दुख मे ही ढकेल रहे हैं अभागिन को। 'मैं मानती हूँ कि बेमेल रिश्ते की बात चलाई है मैंने, पर बैयरवानी हूँ, करमजली के लिए इतना तो कह ही सकती हूँ कि इस खूँटा बँध जाए। क्या मालुम कौन कसाई मोल देकर हाँक ले जाएगा? किड्डा जैसा हीरा फिर कहाँ मिलेगा?' किड्डा का दिल बाँसों उछलने लगा। किवाड़ के पीछे तिरताल पर नाच रहे हैं पाँव।'[1] इस तरह गोमा अपने से उम्र में बहुत बड़े और सम्पन्न लेकिन कुरूप किड्डा से ब्याह दी जाती है। ससुराल में वह अपना घर संभाल लेती है। वह पति किड्डा सिंह को प्यार से रखती है। अभाव और कुरूपता में सने भारतीय ग्रामीण समाज और जीवन में दाम्पत्य के इस रोमानी रंग की झलक रेणु की कहानियों में दिखाई देती है। मैत्रेयी पुष्प की इस कहानी का एक उद्धरण देखिये–'गोमा की हँसी ऐसे छनछनाती हुई फूट–निकली, जैसे काँच की चूडियाँ बिखेर दी हों। नारंगी की फाँक–से होंठ हँसे। किड्डा के मन में रंग बिखर गए। नुकीली ठोड़ी पर एक बूँद गड्ढा पड़ा। उसकी इकलौती आँख पलक झपकना भूल गई। जुन्हैया–भरी रंगत घूँघट में छिपे चेहरे में से छिटक रही है, ध्यान में डूबे बगुला की तरह खड़ा है वह। शीश पर चाँदी का बोल्ला, नाक की सुनहरी लौंग, पाँवों में छमाछम पाजेब। किड्डा के पास ले–देकर एक आँख। ज्यादा तिरपित होना भी प्यास बढ़ाना है। बापू की फिर वहीं हुंकार! किड्डा चौक पड़ा।

'जनानिया बहू का चेला हो गया है। पाँवों पर महावर धर रहा है या माथे पर बेंदी लगा रहा है? लुगाई के गुलाम, माँग–पट्टी करता रहेगा? पल्लू से बँधा रहेगा? लुगाई ले डूबेगी।'

भैंस को पानी पिलाने गया था। क्या बताए बापू को कि पोखर के पानी में भी गोमा की छवि। हँसती हुई गोमा। गोमा की हँसी का दास है वह। टेढा होंठ करके हँसती गोमा का.....।'[2]

स्त्री या पुरुष किसी के जीवन में प्यार एक नैसर्गिक विधान की तरह घटित होता है।सामाजिक संस्थाएं,उनकी परंपराएं उनकी पहरेदारी कर सकती हैं,उन्हें प्रतिबंधित कर सकती हैं उन्हें रोक न सकतीं।यह इस लिए भी असंभव है कि प्यार की अवस्था सिर्फ ऐन्द्रिक संभावनाओं में ही नहीं समाती यह एक मानसिक दशा भी है। किड्डा काबहुत खास बली सिंह देखने में भी सुंदर है।उसकी खेती जमीन भी अच्छी है। अकेले रहता भी है।गोमा उसकी खेती जमीन को हाथ से जाने भी न देना चाहती।

'बलीसिंह कहता है – अकल की सोचो।

क्या सोचे अकल की? अकल क्या बर्द बनकर खेत जोत लेगी?

'खेती तो बर्द ही जोतेंगे। अपनी खेती जोतकर मेरी मदद करा दिया करना, बस। गंगाराम भइया से तो अब उम्मेद नहीं।'

नेकी और पूछ–पूछ! आज किड्डा के चबूतरा पर सिंहासन धरा होता तो उस पर बैठा देता बलीसिंह को। मँझधार में से उबार लिया। इस काली देह की भीतर मन इतना ऊजरा! देवता निकला बलीसिंह।

गोमा मुँह देखकर ही बता दे कि किड्डा के मन में क्या है?

'आज कौन–सा काम बन गया?'

'भई मान गए बलीसिंह को।' उसने सारी बात बता दी।'[3]

गोमा अपनी त्रासदी को निर्मला की तरह दयनीय बनकर ओढ़े रहना भी नहीं चाहती। वह किड्डा सिंह की पत्नी है,बली सिंह उसे प्यार करता है। सदियों पुराना पुरुष वर्चस्व अब अपनी त्रासदी को भोगता है। गोमा और बली सिंह को लेकर गांव वाले तरह तरह की बातें करते हैं। क्या करे किड्डा सिंह। वह बली सिंह पर भी और गोमा दोनों पर शक करता है। झुंझलाता भी है–'किड्डा पागल हो गया था उस दिन। गोमा आई, उसकी गर्दन दबोचते हुए बोला, 'जा साली! यहाँ काहे को आई है? निकल मेरे घर से।' बलीसिंह भीगी

बिल्ली की तरह न जाने कब खिसकर गया। फिर कई दिन तक नहीं आया। वह गोमा का ताबेदार है। हुकुम मानेगा नहीं? मगर किड्डा को चैन है। भरपूर नींद में सोता है। कोई छटपटाहट नहीं।

गोमा ने पाजेबें उतार दीं। चूडियाँ छनकती नहीं। एडियाँ पीली और खुददुरी। चेहरा रोया हुआ। बिना बिन्दी के सूना माथा। किड्डा से बोलना तो दूर, उसकी ओर देखती तक नहीं। पड़ी रहती है कोठे में, धरती पर दरी बिछाकर। उसका मन हुआ, गालियाँ दे। उठाकर पटक दे गोमा को। साली शोक मना रही है? चूड़ी-बिछिया फोड़कर रो रही है! मर गया है क्या तेरा खसम? राँड़ हो गई? तिरिया चलित्तर! पड़ी रह भूखी-प्यासी। देखें कितने दिन चलेगा तेरा स्वाँग?

मगर वह कह कुछ भी नहीं सका। गोमा के पाँव पकड़ लिए। वह फफक-फफककर रोने लगा। किड्डा को नहीं मालूम कि वह उसकी तिरछी मुसकान से खिल उठता है या उसे रोती देखकर पिघलकर बहने लगता है। दोनों ही दशाएँ एक-सी हैं। ऐसी दोनों ही घड़ियों में उसे लगता है, वह गोमा को अपनी बाँहों में भरकर छाती से लगा ले।

कोठे में पड़ी गोमा कराह रही है वह रोने लगी। क्या हुआ? चाची को बुलाऊँ? लेकिन उसके मुँह से निकाला- 'बलीसिंघऽऽअ!'
नहीं, क्यों बुला रहा हूँ बलीसिंह को? वह क्या करेगा? कौन होता है वह?
बलीसिंह कोठे की चैखट पर खड़ा होकर पूछ रहा है-'गोमती ठीक है। बच्चा?'

एक तीखी धार-सी खिंचती चली गई भीतर। मूँछें फड़कने लगीं, ज्यों खुद ही उखड़ जाना चाहती हो। डोरिया-दरियाव का ठहाका भीतर तक घुस आया। बातें सुन रहा है वह-'बालक किड्डा के घर हुआ है या किड्डा का?'
एक ऐना और टूटा-झन्न! सैकड़ों किरचें बिखर गई।
ए लाल के बाबुल आज बधाई बाजी त्यारे।'
बाहर से फिर मिले-जुले ठहाकों के साथ कहावत-हाथी डोले गाँव-गाँव, जाकौ हाथी, ता कौ नाम।

दूसरे ही दिन गाँव के कई लोगों ने अलग-अलग कहा- 'बलीसिंह तो कचहरी में बैनामा के कागज लेते देखा है।'[4]

हालांकि गोमा किड्डा को अपमानित नहीं होने देना चाहती। वह पूरे जतन से किड्डा को खुश रखती है।व ह जीवन को अपनी तरह से जीती है। पुरुषों की बनाई दुनिया में ,जहाँ रूपवती होना भी स्त्री का चरित्रहीन होना माना जाता रहा है उसमें गोमा स्त्री सौंदर्य के मानक बदल देती है। जैसा कि जय प्रकाश जय ने लिखा है-'मैत्रेयी जी पहली ऐसी महिला लेखिका मानी जाती हैं जिसने अपनी कृतियों में गांव की स्त्री की व्यथा को पूरी गहराई से जाना, समझा और व्यक्त किया।'[5]

यह मूलतः चरित्र प्रधान कहानी है जैसे प्रेमचंद के युग में कहानियां लिखी जाती थीं। जैसे गुलकी बन्नो,जैसे मिसपाल जैसे कि अनारो।
मिसपाल चरित्रप्रधान कहानी होने के बावजूद पूरी तरह नयी कहानी ही है। अलगाव बोध,सांकेतिकता आदि के प्रबल और प्रचुर उपयोग के कारण यह बिल्कुल भिन्न किस्म की कहानी है। गोमा हंसती है मूलतः ग्रामीण पृष्ठभूमि की कहानी है इसका कथ्य नया है पर कथानक पुराना ,परिवेश भी बहुत कुछ परिचित है। भाषा में आंचलिकता का पुट है। भाषा के स्तर पर यह कहीं से भी ग्लोबलाइजेशन के दौर की कहानी नहीं लगती। लेकिन आजकल यह चलन सा है कि जो जितना लोकल है उसमें ग्लोबल होने की संभावना भी उतना ही ज्यादा है। केंद्र का विघटन और हासिये का केंद्र बनते जाना इस दौर की प्रमुख विशेषता है,जैसे दूधनाथ सिंह की कहानी' धर्म क्षेत्रे कुरु क्षेत्रे' या ग्रामीण पृष्ठभूमि की कहानी होने के बावजूद 'पिण्टी का साबुन'। ये सारी कहानियां आज के नए दौर की कहानियाँ हैं। समकालीन लंबी कहानियों में मैत्रेयी पुष्प की यह कहानी इस दृष्टि से बेहद महत्त्वपूर्ण है कि इसने स्त्री विमर्श के प्रश्नों को हवा से नहीं ,बल्कि जीवन के यथार्थ से उठाया है। आज स्त्री विमर्श की जमीन महानगर हैं। लेकिन श्रम वंचित मध्यमवर्ग की स्त्रियों के खालीपन और उनकी ऊब का विकल्प नहीं है स्त्री विमर्श।स्वयं प्रकाश की 'बलि' कहानी का एक अंश देखिये-'पति अपढ़ मूर्ख शराबी वहशी है। पहली ही रात उसकी पाशविकता भुगतती है। वहां से भागना चाहती है-पति आकर पीटने लगता है। पति आधुनिक पत्नी पर आधिपत्य जमाने के लिए पीटता है। हालत सुधारने का इंतजार पूरे साल करती है। लड़की पड़ोस में प्रशंसित है। पति इससे भी जलता है। लडकी आत्महत्या कर लेती है।'[6] सदियों से इसी परिवेश में रहती चली आ रही थी स्त्री। गोमा इसकी प्रतिक्रिया है। कथ्य की इस प्रभावी विशेषता के अलावा इस कहानी का विस्तार बहुत ही रोचक विवरणों से भरा हुआ है। इन विवरणों में गांवों का यथार्थ उसी प्रामाणिकता से खुलता जाता है जैसे प्रेमचन्द के यहां। हालांकि ग्रामीण पृष्ठभूमि पर आज ढेरों कथाकारों ने कलम चलाया है लेकिन यह एक बेजो? कहानी है। कहानीपन में भी और कथ्य में भी।'लंबी कहानी के पीछे कई बार लेखक की अपनी भाषिक प्रवृत्ति भी काम करती है। वह गद्य का महाकाव्य तो नहीं,गद्य का काव्य रचने की कोशिश करता है। उसका यह कौशल वर्णन और विवरण में ही अक्सर दीखता है। उसके गद्य में दो भाषिक प्रवृत्तियां काम करती हैं-विचारात्मक और वर्णनात्मक। इन्हीं से वह वातावरण निर्मित होता है,जिसका संबंध अनिवार्य रूप से पात्र से होता है।'[7] परंपरागत कथातत्वों का संज्ञान लूं तो यह कहा जा सकता है कि गोमा के चरित्र के बाद इस कहानी में सबसे प्रभावशाली अभिव्यक्ति वातावरण के बुनावट में दिखाई देती है। एक जीवंत शब्द चित्र की तरह वातावरण उभरता चला चलता है। इधर जितनी भी लंबी कहानियां हिंदी में लिखी गई हैं उनमें भाषा का चमत्कार इतना प्रबल होता है कि भाषा अपने मूल दायित्व को ही खो देती है। ऐसे इस दौर में लिखी गई ढेरों कहानिया हैं,उनका परिवेश है। इन सारी कहानियों में परिवेश की पकड़ इतनी मजबूत होती है,भाषा का आग्रह इतना प्रबल होता है कि कहानी कथानक की रूढ़ि को तोड़कर नए प्रश्नों को बचा जाती हैं। इस मामले में दलित लेखकों की आत्मकथाएं बहुत हद तक मुक्त हैं। एक बात हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि सिर्फ कथानक की नवीनता या अनछुएपन से कहानी मौलिक नहीं बनती है, मौलिक होती है दृष्टि से। यह दृष्टि विचारधारा से ज्यादा बड़े विजन की मांग करती है। तब कोई भी रचनाकार सिर्फ कथानक को नही रचता है। यह रचाव सबसे पहले भाषा के स्तर पर ही शुरू होता है जैसे प्रेमचंद ने कभी किया था और जैसे बाद में रेणु ने किया।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि गोमा समाज की अति परिचित चरित्र होने के बावजूद साहित्य में पुरुष सदी के अंत की घोषणा करती एक सशक्त स्त्री चरित्र है जो जर्जर वैवाहिक संस्था को बदलती तो नही, उससे बदला लेती है। उसी की व्यूह रचना में,उसी के हथियारों से और उसी की तरह होकर।

संदर्भ सूची:-

1. गोमा हंसती है -मैत्रेयी पुष्पा
2. गोमा हंसती है -मैत्रेयी पुष्पा
3. गोमा हंसती है -मैत्रेयी पुष्पा
4. गोमा हंसती है -मैत्रेयी पुष्पा
5. मैत्रेयी पुष्पा-हिंदी.काम-जय प्रकाश जय
6. बलि-स्वयं प्रकाश
7. लंबी कहानी: अतल के लय की खोज-अरुण प्रकाश